राष्ट्रभाषा के प्रांगण में

मैं राष्ट्र-गगन के मस्तक पर
सदियों से अंकित बिंदी हूँ ।
मैं सबकी जानी पहचानी
भारत की भाषा हिंदी हूँ ॥

जब साहित्य पढ़ो , तब पहले पढ़ो ग्रन्थ प्राचीन ।
पढ़ना हो विज्ञान अगर, तो पोथी पढ़ो नवीन ॥ **– रामधारी सिंह ' दिनकर'**

राष्ट्रभाषा के प्रांगण में

अनुक्रमणिका

❖ गद्य कुसुम ❖

१. एकता की कडी : हिंदी	श्री. अमित घोडके,	तृतीय वर्ष कला. ...	१५४
२. संचार माध्यम और हिंदी	कु. सोनाली गायकवाड,	तृतीय वर्ष कला. ...	१५६
३. राष्ट्रभाषा : आज के संदर्भ में	कु. वैशाली लोखंडे,	तृतीय वर्ष कला. ...	१५९
४. भ्रष्टाचार	कु. सविता रंधे,	तृतीय वर्ष कला. ...	१६१
५. अछूत अभी भी अभिशाप है ।	प्रा. साहेबराव गायकवाड,	हिंदी विभाग, व. महाविद्यालय. ...	१६२
६. महँगाई - एक समस्या	कु. स्वाती कोटकर,	तृतीय वर्ष कला. ...	१६५
७. कबीर की दार्शनिक विचारधारा	प्रा. देवीदास चौधरी,	हिंदी विभाग, क. महाविद्यालय. ...	१६७
८. क्या आप जानते है ?	कु. कल्पना भोसले,	तृतीय वर्ष कला. ...	१७१
९. साहित्यिक प्रश्नावली	कु. शिल्पा कोकणे,	तृतीय वर्ष कला. ...	१७१
१०. हिंदी सुविचार	कु. द्वितीय वर्ष कला,	हिंदी विभाग. ...	१७२
११. रुबाई और हरिवंशराय बचन	प्रा.डॉ. अकीला शेख,	अध्यक्षा, हिंदी विभाग. ...	१७३

❖ काव्य सुरभि ❖

१. घायल सिपाही का संदेश	कु. शकुंतला पारधी,	तृतीय वर्ष कला. ...	१७६
२. मैंने सोचा	श्री. अर्जुन उगले,	द्वितीय वर्ष विज्ञान. ...	१७६
३. बापू मेरे	प्रा.डॉ. अकीला शेख,	अध्यक्षा, हिंदी विभाग. ...	१७७
४. कहो ना प्यार है	श्री. मुकेश पवार ,	द्वितीय वर्ष कला. ...	१७७
५. मुक्तक	श्री. अमित घोडके,	तृतीय वर्ष कला. ...	१७८
६. कुछ रुबाइयाँ	संकलन,	तृतीय वर्ष कला, हिंदी विभाग. ...	१७९

सबसे अधिक सुखी समाज वह है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति परस्पर हार्दिक सम्मान की भावना रखता हैं। – गटे

❖ गद्य कुसुम ❖

एकता की कडी : हिंदी

श्री. अमित घोडके,
तृतीय वर्ष कला.

आज भी काश्मिर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से कामरुप तक फैले देवस्थानों के तीर्थपथिकों की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही है। आरम्भ से ही हिन्दी ने विविध जातियों एवं क्षेत्रों की भावनाओं और लोक-परम्पराओं को स्वर देते हुए अखिल भारतीयता को दिग्दिगन्त में गुंजायमान किया है। ताज़ा प्रमाण है कि इसने विदेशी दासता के विरुद्ध सुलग रही स्वाधीनता की शक्तियों का एकीकरण किया।

भारत एक राष्ट्र है, राष्ट्रों का संघ नहीं। जब हम राष्ट्र की बात करते है तो एक सांस्कृतिक चित्र उभरता है। जिसमें भौगोलिक राजनीतिक और सामाजिक विभिन्नताएँ समाहित होती हैं। इसीलिए राष्ट्र की पहचान के लिए कुछ प्रतीक निर्मित होते है। जिनमें भाषा मुख्य है। भाषा अर्थात वाणी जो राष्ट्र की भावनाओं, अकांक्षाओं तथा विभिन्नताओं को ध्वनित करती है। भाषा की दृष्टि से जितनी विभिन्नता भारत में हैं, प्रायः और देशों में नहीं मिलती। १९ भाषाएँ तो हमारे संविधान द्वारा स्वीकृत है। इसके अतिरिक्त बहुत सी ग्रामीण बोलियाँ भी हैं। जिनकी संख्या ५४४ तक है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पश्चिम में सिन्धु से लेकर पूर्व में बंगाल की खाडी तक विस्तृत इस देश की विभिन्नताएँ, भौगोलिक और प्राकृतिक दृष्टियों से भी कम महत्व पुर्ण नहीं हैं। फिर भी सारे देश की एक ऐसी व्यापक संस्कृति हैं जो युगों युगों से सारे भारत को एक सूत्र में बाँधे हुए है। यही राष्ट्रीय एकता है और इस एकता का रक्षण संस्कृत से जन्मी उसकी ज्येष्ठ कन्या हिंदी कर रही है।

हिंदी अपने जन्मकाल से ही भारतवर्ष की जनभाषा, सम्पर्क भाषा और राष्ट्रभाषा रही है। इसकी शक्ति का सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि शुरु से ही अनवरत विरोध झेलते और राजनिती के हर दरवाजे पर ठोकर खाते हुए भी वह कभी मिटी नहीं, बल्कि विकसित होते व पसरते हुए १४ सितंबर १९४९ के दिन हिन्दी भारतीय संविधान में राजभाषा के पद पर आसीन हुई। जिन युगों में भाषा का प्रचार किसी संसदीय विधेयक के अधीन नहीं था, कोई राजकीय प्रश्न नहीं था, उनमें भी हिन्दी भारतीय जन-जीवन, धर्म-संस्कृति व व्यवसाय की अंतर प्रांतीय भाषा थी।

हिंदी शब्द का अर्थ हैं 'हिन्द' की या भारतीय। हिन्दी संतों की भाषा रही है। सिद्धों- नाथों ने इसी की वीणा के तार छेड़ छेड़ कर सुप्त जन चेतना को जगाया, चन्दबरदायी ने पृथ्वीराज के करवालों में इसी की झंकार भर कर भारत माता के लिये जीने व मरने का वीर पाठ पठाया। मिथिला की अमराइयों में विद्यापति ने इसी के कलकुजन का सिंधु बहाया। सुर, तुलसी-कबीर, जायसी-मीराँ- रसखान आदि भक्त कवियों ने अपने कोमल हृदयों के रस इसी के प्याले में परोसकर विजातीय आक्रमण के

इस वक्त देश में जो सबसे आवश्यक और बुनियादी चीज है और जिसे हर कोई बुनियादी मानता है, वह है भारत की एकता। **– मैथिलीशरण गुप्त**

विष से विमूर्च्छित मनों को हरा-भरा किया। भूषण के ओजोदिप्त स्वरों में इसी की ऊर्जा थी, धनान्द के मर्मोद्गारों में इसी की करुणा थी। बिहारी और देव की विलास-विधियों में इसी के वन्दनवरा थे तथा सभी जानते है कि भारतेन्दु ने 'जब निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मुल' का हुंकार कर गुलाम भारत की मृतप्राय धमनियों में उबाल पैदा की, तो उसमें इसी हिंदी की प्राणवत्ता थी। योगियों की सारंगियों, साधुओं के कमण्डलों, तीर्थयात्रियों की गठरियों, व्यापारियों की पेटियों, चरवाहों की मुरलियों और घुमन्तु जातियों के अपने- अपने वाद्यों में संचित होकर इसी का मधुर रस देश-देशान्तरों तक फैलता रहा हैं। आज भी काश्मिर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से कामरुप तक फैले देवस्थानों के तीर्थपथिकों की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही है।

आरम्भ से ही हिन्दी नें विविध जातियों एवं क्षेत्रों की भावनाओं और लोक-परम्पराओं को स्वर देते हुए अखिल भारतीयता को दिग्दिगन्त में गुंजायमान किया है। ताज़ा प्रमाण है कि इसने विदेशी दासता के विरुद्ध सुलग रही स्वाधीनता की शक्तियों का एकीकरण किया। इस समय की भारतीय भाषाओं में एक यही है, जिसमें पथ-क्षेत्र- निरपेक्ष अशेष राष्ट्रीयता का इतना विशाल समाहार है। हिन्दी का कवि यदि हिमगिरी की वंदना करता है, तो हिन्द महासागर में भी उसी श्रद्धा से निमज्जन करता है, आसाम के मनोहर अरण्यों में विहार करता है, तो उसमें उपलब्ध सतरंगे फुलों को गुजरात के सोमनाथ पर चढाना भी नहीं भुलता। राणाप्रताप की आरती उतारता है, शिवाजी व अशफाक उल्लाखाँ में उसने कभी विभेद नहीं किया।

कहने का तात्पर्य इतना है कि हिन्दी ने प्रत्येक कालमें देश की एकता को बनाये रखा। चाहे वो आदिकाल हो, भक्तिकाल हो, आधुनिककाल हो, हर समय उसने देश की एकता को बनाये रखा।

वर्तमान में भी हिन्दी ने राष्ट्र की एकात्मता बनाये रखी है। आज कम्प्युटर के युग में हिन्दी अंग्रेजी के बराबर है। पहिली बार भारत में जब कम्प्युटर आया तो भाषा अंग्रेजी होने के कारण प्रसार नहीं हो पाया। लेकिन समय के साथ-साथ हिन्दी में सॉफ्टवेअर विकसित किए गए। इन सॉफ्टवेअरों का प्रयोग शिक्षण, उद्योग, मनोरंजन तथा प्रबंधन आदि में व्यापक स्थर पर हो रहा है। हिन्दी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं में कम्प्युटर के इस्तेमाल की दृष्टि से आज अनुप्रयोग (एप्लीकेशन) सोफ्टवेअर के विभिन्न पॅकेजों का निर्माण किया गया है। जिसके माध्यमसे हिन्दी तथा प्रांतीय भाषाओं में काम करना संभव हो गया है। देवनागरी पर आधारित लीला प्रबोध नामक सॉफ्टवेअर भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा सी-डेक पुणे के सहयोग से निर्मित किया गया है। इसकी सहायता से कम्प्युटर के माध्यम से आसानी से प्रबोध स्तर एक हिन्दी सीखी जा सकती है। इस प्रकार कम्प्युटर क्षेत्र नें क्रांती की हैं। आज कम्प्युटर द्वारा सारे राष्ट्र नज़दीक आ गए है। एक राष्ट्र दुसरे राष्ट्र के साथ संपर्क बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय भाषा का प्रयोग करता है। हमारे लिए बडी अभिमान की बात है कि चिनी, अंग्रेजी के बाद हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी तिसरे स्थान पर है। संयुक्त राष्ट्रसंघ संहिता के कलम ५४ के अनुसार मा. अटलबिहारी वाजपेयी और मा. नरसिंहरावजीने संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना अभिभाषण हिन्दी भाषा में करके हिन्दी को आंतरराष्ट्रीय मंचपर सन्मानित किया है।

हिन्दी किसी की कृपाकटाक्ष की मोहताज नहीं है। अगर वह मोहताज है तो अपने सच्चे सुपुत्रों की।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का अनुयायी (विद्यार्थी) होने के नाते मैं अपनी भाषा के लिए इतनाही कहूँगा...

''चलो हिन्दी में काम करे
सारी दुनिया में आओ हिन्दी का नाम करें।
हिन्दी बोले हिन्दी सीखे
हिन्दी में बताएं
चिठ्ठी पत्र लिखने में भी
हिन्दी को अपनाएँ
हिन्दी ही अपनी संस्कृति हैं उसे प्रणाम करें।
हिन्दी में ही करें दस्तखत
लेख लिखे हिन्दी में
कार्यालय के कामकाज सब
हमें दिखें हिन्दी में
हिन्दी का ही यशोगान हम सुबह व शाम करें
हम सुबह व शाम गान करें।''

संचार माध्यम और हिंदी

कु. गायकवाड सोनाली,
तृतीय वर्ष कला.

जनसंचार माध्यमोने हिंदी की अभिव्यक्ति क्षमता को निरंतर बढाया है। हिन्दी जनचेतना को स्वर देने में सर्वाधिक समर्थ होकर धीरे-धीरे राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा बनने जा रही है।

सरल, सुबोध, प्रांजल, पावन हिन्दी भाषा।
बनी राजभाषा स्वदेश की, संविधान के द्वारा।

आज़ादी के बाद, हमारे देश को बहुभाषी देश होने के कारण ऐसा महसूस होने लगा कि अपनी कोई एक सुनिश्चित भाषा हो, जिसके माध्यम से संपुर्ण देश में कार्य संचालन किया जा सके एवं जिसे राजभाषा का रुप दिया जा सके। परिणाम स्वरुप हिन्दी को राजकाज की भाषा अर्थात राजभाषा स्वीकार किया गया।

वैसे तो भारत विविध जातियों एवं प्रान्तों से बना देश है। हर एक प्रांत एवं जाति की अलग अलग बोलियाँ रही है। परंतु समग्र देश में जिसका अधिकतम प्रयोग हो रहा है वह हिन्दी भाषा है। क्योंकि हिन्दी को सामान्य वर्ग समझ सकता है और उसमें अपना कार्य कर सकता है।

महात्मा गांधीजी ने सन १९१७ मे सारे देश का भ्रमण करके यह जान लिया कि हिन्दी ही सारे देश को एकता के सूत्र में बाँध सकती है। हमारे देश के सभी राजपुरुषों और नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का एक प्रबलतम साधन बताया है।

हिन्दी एक जीवित भाषा है। जिसकी पाचन शक्ति अत्यंत तीव्र है। उसने अनेक देशी-विदेशी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात किया है। इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित वर्ण है। जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। हिंदी में नए शब्द निर्माण की अद्‌भूत शक्ति है। इसलिए राजभाषा हिन्दी महान है।

राष्ट्रीय एकता के आवश्यक तत्व है, धर्म, भाषा, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय स्तर का प्रभावशाली व्यक्तित्व। इन चारों तत्वों में भाषा की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हिन्दी ही राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। हिन्दी सभी प्रादेशिक भाषाओं का बृहत्तर रुप है। इसलिए हिन्दी समस्त राष्ट्र की एकता की कड़ी एवं अखंडता की नीव है।

भाषा मनुष्य के बुद्धि के सहारे चलती है, इसलिए जब किसी विषयतक बुद्धि नही पहुंचती, तब भाषा अधुरी होती है। – म. गांधी.

राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के सूत्र में सबको आबद्ध करने का श्रेय केवल भाषा को ही है। यह कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी कर सकती है।

हिन्दी ज्ञान की सभी विद्याओं की संवाहिका है। हिन्दी संस्कृत भाषा की पूत्री ही नहीं विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा भी है। यह जन-व्यवहार में उपयोग की दृष्टि से एक सक्षम माध्यम है। हिन्दी विश्व की तिसरी सबसे बड़ी भाषा कही जाती है। भारत में हिंदी भाषियों की कुल संख्या तकरीबन ४६ करोड मानी जाती है जब कि विश्व में हिन्दी जाननेवालों कि संख्या लगभग ८० करोड है।

आज देखा जाये तो हिंदी हर एक क्षेत्र में अपना स्थान स्थापित कर रही है। हिन्दी की संप्रेषण क्षमता अतुलनीय है, संप्रेषण हमारे वातावरण के साथ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर एक प्रकार की अन्तःक्रिया है। मीडिया के रूप में प्रचलन में है - एक प्रिन्ट मीड़िया और दुसरा है इलेक्ट्रॉनिक मीड़िया। आजकल हिन्दी का वैश्विक व्यावसायीकरण के कारण निरन्तर एक तरफ प्रचार प्रसार हो रहा है एवं संख्या बल के आधार पर हिन्दी आर्थिक एवं वाणिज्यिक कार्यों की भाषा बनती जा रही है।

प्रिन्ट मीड़िया में समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ आती हैं। स्वतंत्रता के बाद समाज में राजनीतिक जागृति, सामाजिक, धार्मिक आर्थिक गतीविधियों एवं घटनाओं के प्रति जन सामान्य की जिज्ञासा में वृद्धि होने के कारण हिन्दी समाचार पत्रों की संख्या में बड़ी वृद्धि हो रही है। भारत में सबसे अधिक २०,५८९ समाचार पत्र हिन्दी में प्रकाशित होते हैं। प्रिन्ट मीड़िया ने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन को हिन्दी के माध्यम से गति प्रदान की थी। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी को संपर्क भाषा एवं राजभाषा घोषित करने के कारण हिन्दी समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का निरंतर प्रसार बढ़ता जा रहा है।

इलेक्ट्रॉनिक मीड़िया में आकाशवाणी, दूरदर्शन, एवं इंटरनेट पर भी हिन्दी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। आकाशवाणी की देश की ९५ प्रतिशत जनसंख्या तक पहुँच है। एवं इसके विविध भारती एवं एफ एम चॅनेल चित्रपट, संगीत द्वारा हिन्दी के प्रसार में अपूर्व योगदान कर रहे है। भारत में दूरदर्शन का प्रादुर्भाव सत्तर के दशक से हुआ। दूरदर्शन के विभिन्न चॅनेल द्वारा हिंदी में पर्याप्त कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है।

हिन्दी की साहित्यिक कृतियों में उपन्यास, नाटक, कविता, कहानी आदि पर दूरदर्शन ने काफी सराहनीय प्रयास किए है। रामायण, महाभारत, कौन बनेगा करोडपती द्वारा घर घर तक हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो गया है।

हिन्दी फिल्मों के संगीत ने हिन्दी के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कर्णप्रिय हिन्दी फिल्मी गीतों के कार्यक्रम भारतीय ही नहीं विदेशी रेडिओ पर भी सुनाई देते है।

कम्प्युटरों एवं इन्टरनेट पर हिन्दी तेजी से बढ रही है। केन्द्र सरकार के भी मंत्रालयों की वेबसाईट हिन्दी एवं अंग्रेजी में बनाई जाती है। हिन्दी के कई सॉफ्टवेअर एवं फोन्ट बाजार में उपलब्ध है। सरकार द्वारा भी इस विषय पर कार्यवाही की जा रही है। इस प्रकार जनसंचार माध्यमों ने हिंदी की अभिव्यक्ति क्षमता को निरंतर बढाया है। हिन्दी जनचेतना को स्वर देने में सर्वाधिक समर्थ होकर धीरे-धीरे राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा बनने जा रही है।

भारत में जिस्ट प्रौद्योगिकी के आविष्कार से अंग्रेजी भाषा सहित सभी भारतीय भाषाओं और विश्व की अनेक भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान के संसाधन विश्लेषण का कार्य अब हिन्दी में कर सकने की व्यापक संभावनाएँ

अन्वेषक में दृढ़ निष्ठा होनी चाहिए, विश्वास नहीं। – **क्लॉड बर्नर्ड.**

पैदा हो गई है। राजभाषा विभाग के तकनीकी कक्ष ने जिस्ट कार्ड युक्त वैयक्तिक संगणकों के लिए 'की सॉफ्टवेअर पैकेज' का निर्माण किया है। रेल्वे सूचना प्रणाली केंद्र, नई दिल्ली अंग्रेज़ी शब्दों के समांतर हिन्दी लिप्यंतरण करनेवाला पॅकेज विकसित किया है। पुणे में स्थित सीडैक ने हिन्दी वर्तनी जांच प्रक्रिया सामग्री का विकास किया है। ओशे कम्यून इन्टरनॅशनल ने हिंदी के फोन्टस 'अमृत', अभिलाषा और बसंत विकसित किए है, जिनका प्रयोग एपल मे किन्टाश संगणक पर होता है। इस प्रकार प्रौद्योगिकी क्षेत्र में आज राष्ट्रभाषा हिंदी विकसित हो रही है।

भारतीय बैंकिग व्यवस्था जनता की सेवा का एक सशक्त माध्यम है। इस माध्यम में हिंदी का प्रयोग करना आरंभ हो गया है। उदारीकरण और वैश्विकरण से विदेशों में हिन्दी की पहचान बनी तथा समूह माध्यमों ने आज हिन्दी को घर घर की जन-जन की भाषा बना दिया है। आशा की एक किरण दिखाई दे रही है। हिन्दी शीघ्र ही आर्थिक विकास वित्तीय व्यवस्था, एवं बैंकिंग क्षेत्र में गौरवपूर्ण स्थान ग्रहण करेगी।

आज इंग्रेजी और चीनी भाषा के बाद विस्तार की दृष्टी से संसार में हिन्दी का तिसरा स्थान रहा है। किन्तु सरलता और समझी जानेवाली भाषा के रुप में हिन्दी का स्थान विश्व में प्रथम है। भारत के संदर्भ में तो शिवपूजन सहाय का कहना है कि 'हम डंके की चोट से कह सकते है कि भारत वर्षे में केवल हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसकी आवाज़ हिमालय के गौरीशंकर शिखर से कन्याकुमारी तक काफ़ी प्रभाव के साथ गुंज सकती है। किन्तु हम बोल-चाल से लेकर बच्चों की शिक्षा-दिक्षा तक अंग्रेजी भाषा को पसंद करते हुए गर्व से शिक्षित होने का उदाहरण देते रहते है। अर्थात हिन्दी से हमें नफरत नहीं है, पर हम अंग्रेजी के समान इसे प्यार भी नही करते। आज चिंता यह सताए जा रही है कि हिन्दी अपने ही घर में बेगानी बनती जा रही है।'

हमें जापान, रुस, जर्मनी, चीन, फ्रांस, स्पेन जैसे देशों से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन देशोंने अपनी मातृभाषा एवं लिपि का विकास कर दुनिया से अपना लोहा मनावाया है। उसी प्रकार अब हमें हिन्दी भाषा को पखवाडों तक ही सीमित न करके हमारे जीवन पर्यन्त कार्यो में स्थान देना होगा। हिन्दी के बिना भारत देश को कोई भी पूर्ण रुप से पहचान नहीं सकता है जिसके ताजे उदाहरण इस प्रकार रहे है। देवेगौडा प्रधानमंत्री बनते ही हिन्दी सिखने लगे थे। श्रीमती सोनिया गांधी का राजनीतिक सभाओं में 'हिन्दी' में भाषण देना आदि। लाख सितम ढाये जमाना हस्ती मिटती नहीं अपनी। अतः देश की आधुनिक एकता एवं परंपरागत अस्मिता के साथ हिन्दी देश की आत्मा है।

विश्व भाषा के रुप में यदि हमें हिन्दी को प्रतिष्ठित करना है तो हमें अपनी भाषा को बलवान बनाना होगा। हिन्दी भाषा में कार्य करना होगा। हर नए आविष्कार, हर नए उपक्रम, हर एक नई सोच से हिन्दी को जोड़ना होगा। हमारी शिक्षा प्रणाली में हिन्दी को महत्वपूर्ण एवं सम्मानीय स्थान देना होगा। हिन्दी को राष्ट्र की ठोस आवश्यकता बनाना होगा। खास करके हिन्दी पढ़ने लिखने वालों को याने की हमको हिन्दी रुपी मूल धरोहर की सुरक्षा करनी होगी, जिससे हिन्दी को राष्ट्र के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी समृद्धि के साथ यश प्राप्त हो सके।

कोटि, कोटि कंठों की भाषा,
जनगण की मुखरित अभिलाषा
हिन्दी है पहचान हमारी,
हिन्दी हम सबकी परिभाषा।

राष्ट्रभाषा के रुप में हिन्दी का व्यापक प्रचार प्रसार

भाषा और साहित्य की जागृति राष्ट्रीय उन्नति के मार्ग की पहली मंजिल है। – **पुरुषोत्तमदास टंडन .**

होना अति आवश्यक है। हिन्दी के उपयोग और विश्व में प्रचार-प्रसार के लिए अब आवश्यक प्रौद्योगिकी उपलब्ध है। विश्व में अब वही भाषा लोकप्रिय होगी, जिसका व्याकरण-विज्ञान संगत होगा। जिसकी लिपि कम्प्युटर, मोबाईल की लिपी होगी। इस दृष्टी से हिंदी काफी समृद्ध है। हमे इसे और समृध्द बनाने के लिये निरंतर नए प्रौद्योगिकी का विकास करते रहना होगा और उसे तेजी से अपनाना भी होगा। संक्षेप में कहूँ तो निम्नरुपेण तीनों सुत्रों को आत्मसात कर लेने पर ही हमारे व्यक्तित्व में हिन्दी के प्रति बदलाव आएगा।

'हम हिन्दुस्तानी हैं
हिन्दी हमारी भाषा है और
हिन्दी बोलने और लिखने
में हमें गर्व महसूस होता है।'

राष्ट्रभाषा : आज के संदर्भ में

कु. वैशाली लोहकरे,
तृतीय वर्ष कला.

हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा के प्रचार प्रसार में तथा उसे समृद्ध बनाने में अपना योगदान दें। हिंदी के रंग में भिगा नया हिंदुस्तान बना दें। कवि नवीन के शब्दों में कहना चाहुँगी, ''जाए जिस ओर ज़माना तुम उसे जाने दो। गा रहा है जो समय, गीत उसे गाने दो। चाहते ही हो बनाना जो नया हिंदुस्तान। देश की धूल को हँसने दो मुस्कुराने दो।''

हमारा भारत एक विशाल देश है। यहाँ अनेक प्रांत हैं। और प्रत्येक प्रांत की अपनी विशेष भाषा है। उत्तर और दक्षिण भारत की भाषाओं में काफी भिन्नता है। देश में एक आम भाषा न होने पर भिन्न भिन्न प्रांतो के लोगों का मेल-मिलाप बहुत कठीन हो जाता है। इसलिए हमारे यहाँ एक उत्तम संपर्क भाषा का होना बहुत ज़रुरी है। यही कारण है कि स्वतंत्र भारत के संविधान में हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया है।

राष्ट्रभाषा हिंदी बहुत पहले से देश की संपर्क भाषा रही है। वह देश की सबसे अधिक प्रचलित भाषा है। १४ सितंबर १९४९ को हिंदी को राजभाषा का सम्मान प्राप्त हुआ। संविधान के राजभाषा अधिनियमों में समय समय पर संशोधन हुए। सन १९७६ के संशोधित अधिनियम के अनुसार आज केंद्रशासन का अधिकांश कामकाज हिंदी में चल रहा है। आज अहिंदी भाषी प्रदेशों के लोग भी अच्छी हिंदी बोल लेते हैं। अहिंदी भाषी लेखक भी हिंदी में उत्कृष्ट रचनाएँ करते हैं।

आज देश के हर क्षेत्र में हिंदी बोली या समझी जाती है। हिंदी अखबार और पत्र-पत्रिकाएँ देश में बहुत बिकते है। देश के बाज़ारों और मेलों में हिंदी ही सुनाई

दुनिया भर में भारत को छोडकर कोई भी ऐसा देश नहीं मिलेगा,
जहां एक विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। **– पी. कुंजिर.**

देती है। रेलगाडियों में यात्री भी परस्पर प्रायः हिंदी में ही बातचीत करते हैं। सेना में भी हिंदी का प्रयोग होता है। इस तरह देश को एक और अखंड बनाने में हिंदी का बहुत बड़ा हाथ है। वह हमारी राष्ट्रीय एकता की कड़ी है। जिस भाषा को किसी राष्ट्र के अधिक से अधिक लोग बोल अथवा समझ सकते हैं वह उस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा कहलाती है। आज भारत देश के अधिकांश लोग इसका प्रयोग करने लगे है। देश की अधिकांश जनता इसे बोलती और समझती हैं।

आज हमारे देश में राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज आदि का जिस प्रकार सम्मान होता है उसी प्रकार राष्ट्रभाषा का भी सम्मान हो रहा है। राष्ट्रभाषा का महत्व और प्रयोग शासन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। आज के समय में राष्ट्रभाषा का प्रयोग साहित्य, शिक्षण, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि अनेक क्षेत्रों में किया जा रहा है। राष्ट्रभाषा हिंदी एक समृद्ध भाषा है। इस भाषा में देश की मिट्टी की महक है। इसमें पूरे राष्ट्र की आत्मा प्रकट होती है। इसका साहित्य बहुत उच्च कोटि का हैं। लगभग सभी विषयों पर हिंदी में पुस्तके उपलब्ध है। इसमें संदेह नहीं कि हिंदी एक जानदार भाषा है। आज विदेशों में भी हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। हिंदी फिल्में बरसों से मनोरंजन का प्रमुख साधन रही है। आज दूरदर्शन पर दिखाए जानेवाले हिंदी धारावाहिक बड़े लोकप्रिय हो रहे है।

हमारा भारत देश इतना बड़ा है कि जिस विभाग में जाओ नयी भाषा, नयी वेशभुषा, नयी नयी खाने की चीज़े, सृष्टी का नवीन रूप देखने को मिलता है। उन लोगों की भाषा अलग, हमारी भाषा अलग इसलिए हम वार्तालाप नहीं कर पाते। लेकिन हिंदी भाषा संपर्क का काम करती है। आज हर प्रांत का आदमी हिंदी को बोल और समझ सकता है। आज हवाई सुंदरी को भी सब भाषायें सिखनी पड़ती है। हम अगर किसी मंत्री या अभिनेता - अभिनेत्री का साक्षात्कार लेने जाते है, तो हमे अपनी राष्ट्रभाषा का ही उपयोग होता है। राष्ट्रभाषा हिंदी सिखने से हम आज कहीं भी झट से वार्तालाप कर सकते हैं।

आज देश-विदेश में हिंदी ने अपनी पहचान बना ली है। विश्व की भाषाओं में हिंदी का सम्मान बढ़ रहा है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा के प्रचार प्रसार में तथा उसे समृद्ध बनाने में अपना योगदान दें। हिंदी के रंग में भिगा नया हिंदुस्तान बना दें। कवि नवीन के शब्दों में कहना चाहुँगी,

''जाए जिस ओर ज़माना तुम उसे जाने दो
गा रहा है जो समय, गीत उसे गाने दो
चाहते ही हो बनाना जो नया हिंदुस्तान
देश की धूल को हँसने दो मुस्कुराने दो।''

अनेकता में एकता

भारत में अनेक प्रकारके लोग रहते हैं। उनमें एकता भी है, लेकिन अनेकता बहुत है। आप असम से दक्षिण में कन्याकुमारी तक जाइए। आप कितना फर्क पायेगे भाषा में, खाने-पीनेमें, कपडे-लत्ते पहनने में और सब बातो में। उसी के साथ आप संस्कृति की एक जबर्दस्त पक्की एकता भी पायेगे जो प्राचीन समयसे चली आती है। भारत की जो असली संस्कृति है, वह दिमाग की है, या यह कहिए, मन की है, आध्यात्मिक है। **– जवाहरलाल नेहरू**

राष्ट्रीयता एक अच्छी चीज है, लेकिन वह नए जमाने में पूरे तौर से चल नहीं सकती, क्योकि अन्तर्राष्ट्रीय जीवन बढने लगा है। लेकिन हमारी मुसीबत तो यह है कि हमारे देश में खुद राष्ट्रीयता तक पूरी नहीं है। **– जवाहरलाल नेहरू.**

भ्रष्टाचार

कु. सविता रंधे,
तृतीय वर्ष कला.

स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले जो ड़र और नैतिकता की कार्यप्रणाली थी वह अब समाप्त हो गई है। जैसे गिरगीट प्रसंग के अनुकूल दिन में रंग बदलता है उसी प्रकार भ्रष्टाचार के भी अनेक रंग हैं। जैसे मिलावट, रिश्वत भाई भतीजावाद, तस्करी, चोर बाज़ारी, काले धंदे आदि।

जब कभी एकांत में होती हूँ तब सोचने लगती हूँ कि भ्रष्टाचार क्यों, कब और कैसे आरंभ होता है? तब मन और मस्तिष्क के पटल पर अनेकानेक जिज्ञासाएँ उभर कर आती है। सचमुच आज का युग भ्रष्टाचार का युग बन गया है। सब तरफ भ्रष्टाचार का बोलबाला है। भ्रष्टाचार का ज़हरीला वृक्ष इतना मज़बूत हो रहा है की बाद में उसे काट पाना बहुत मश्किल है।

आप अगर कहीं ईमानदारी से कार्य कर रहे हैं तो आपको ऐसा मजबूर किया जाता है कि असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। मेरे विचार से अनैतिक व्यवहार ही भ्रष्टाचार है। वास्तव में रिश्वत लेना और देना दोनों पाप है, फिर भी यह धंदा दिन रात फल-फूल रहा है। कभी - कभी परेशान व्यक्ति जो रिश्वत देने के पक्ष में नहीं होता है, फिर भी उस विभाग के कर्मचारी उसे इस तरह मजबूर कर देते है कि जिससे रिश्वत के बिना वह आगे बढ़ नहीं सकता।

बड़े-बड़े अधिकारी नेता, इंजिनिअर व्यापारी आदि भ्रष्टाचार को बढावा देते हैं। इसलिए प्रगति और विकास के लाभ सामान्यजन तक पहुँचने के बजाए भ्रष्टाचारियों के जेब में ही चले जाते हैं। आज स्मशान भूमि में अंतिम विधी के लिए प्रबन्ध करने के लिए भी रिश्वत देनी पडती है। मतलब जीते जी तो क्या हमारे मरनेपर भी बिना रिश्वत हमारी मुक्ती नहीं है। भ्रष्टाचार ने हमारा जीना दुभर कर दिया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले जो ड़र और नैतिकता की कार्यप्रणाली थी वह अब समाप्त हो गई है। जैसे गिरगीट प्रसंग के अनुकूल दिन में रंग बदलता है उसी प्रकार भ्रष्टाचार के भी अनेक रंग हैं। जैसे मिलावट, रिश्वत भाई भतीजावाद, तस्करी, चोर बाज़ारी, काले धंदे आदि। महँगाई के कारण देश की आधी जनता मर रही है। बाढ़ तथा अकाल की स्थिति से भी सब परेशान है, देश में राजनीतिक उथल-पुथल मची हुई है। इसके समान और भी अनेक समस्यायें हैं। ऐसी भयानक स्थिति मे जिसका जहाँ वश चलता है वहाँ दुसरे की जेब काट कर वह अपना बैंक बॅलेन्स बढ़ाते हैं। कुछ लोग तो इतने भाग्यशाली होते हैं कि उन्हें भ्रष्टाचार करने के लिए कहीं जाना नहीं पड़ता। वे स्वयं अध्यात्मिक बनने का दावा कर, कहते है कि,

नीतिज्ञ के लिए यश और धन की कमी नहीं है। – **प्रेमचंद.**

''अरे ! उपरवाला देता है तो छप्पर फाडकर देता है !'' भ्रष्टाचारी अन्याय, अत्याचार दूराचार जैसे पापों को गले लगाते है। भ्रष्टाचार का क्षेत्र बहुत विशाल है। राजनीतिक आर्थिक, धार्मिक सांस्कृतिक, सामाजिक आदी सभी क्षेत्रों को संस्पर्श करते हुए वह अपने हाथ पैर फैला रहा है।

आपको याद होगा जपान में भ्रष्टाचार के कारण कितनी उथल-पुथल मच गई थी। भारत में अगर भ्रष्टाचार के संदर्भ में आंदोलन छेड़ा गया तो आधे नेता मर जायेंगे और शेष इस्तीफा देकर परास्त हो जायेगें।

सिनेमाघर, कार्यालय, महसूल विभाग, ज़िला परिषद, नगर निगम आदि में तो खुलेआम भ्रष्टाचार होता है।

यह सब क्यों हो रहा है ? इस प्रश्न का उत्तर होगा, अपेक्षा भंग। स्वातंत्र्यपूर्व काल में हमारे सैनिक और नेताओं ने जो सपने देखे जो अभिलाषाएँ रखी थी उनमें से एक भी पुरी नहीं हुई। दुसरा हे परिवेश। आज का वातावरण ही ऐसा बना दिया गया है कि बिना भ्रष्टाचार के तुम सुखी नहीं हो सकते। क्योंकि अपनी खाऊ प्रवृत्ति होने के कारण ऐसे परिवेश में सज्जन का काम करना तथा जीना बहुत मुश्किल हो गया है। तिसरा है आदर्श तथा सत्य का अभाव। इसके कारण भ्रष्टाचार दिन दुनी रात चौगुनी उन्नती कर रहा है। अतः मैं सोच कर रह जाती हूँ कि क्या कभी भ्रष्टाचार समाप्त होगा ?

अछूत अभी भी अभिशाप है।

प्रा. साहेबराव गायकवाड,
व्याख्याता, हिंदी विभाग.

आज हम स्वतंत्र है। भारत को स्वतंत्रता मिल कर साठ साल हो गये, भारत ने वैज्ञानिक प्रगति की है। विश्व में भारत का सिर ऊंचा है यह हमारे लिए गौरव की बात है, हम सभी भारतवासियों को इस देशपर अभिमान है फिर भी पढे, लिखे अस्पृश्य युवकों को सवर्णों की बस्ती में आज भी किराये से मकान नहीं मिलते।... मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे राज्यों में आज भी अछूतों को मंदिर प्रवेश नहीं है।

भारत एक बहु आयामी देश है। विविधता में एकता इसकी ऐतिहासिक विशेषता है। मनुष्य को सम्मान मिले मनुष्य की हैसियत से उसकी पुजा हो यहीं सपना रहा है फिर मनुष्य किसी भी जाति का हो धर्म का हो पंथ का हो।

वैदिक काल देखा जाय तो हम अस्पृश्यों या शुद्रों के पुरुषार्थ को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। वेद कालीन राजा सुदास भी शुद्र थे। वैदिक परम्परा के अनुसार वे राजर्षि विश्वामित्र के संरक्षक थे। इन्हीं राजा सुदास का राज्याभिषेक वशिष्ठ ने किया था। राजा सुदास के अश्वमेध यज्ञ करने का उल्लेख भी वैदिक वाङमय की धरोहर है। वैदिक युग में अस्पृश्यों का उनके पुरुषार्थी रुप के कारण

एक ही बूंद वीर्य से सब उत्पन्न हुए हैं, सबका मल-मुत्र, चमड़ा तथा मांस एक ही है। सब लोगों का जन्म एक ही ज्योति से हुआ है। इसलिए न कोई अपना है न कोई पराया है। सब मनुष्य एक ही है। **– महात्मा कबीर.**

महत्त्व था। इसके अनन्तर उसमें उनेका नेक रुप से परिवर्तन आते गये और यह प्रश्न तीव्रातितीव्र होता गया। भारत में मुट्ठी भर अँग्रेज व्यापार के निमित्त आये, उनकी चाल को मुगल शासक समझ न सके और वे भारत में प्रतिष्ठित हो गये। उनकी नीति का सूत्र था 'फुट डालो और राज करो'। उन्होने तत्कालीन समाज का गहराई से अध्ययन किया और भारत में परम्परा से आया हुआ अस्पृश्यता का विचार उनके पक्ष में लाभकारी सिध्द हुआ।

भारत अपनी स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न करने लगा। महात्मा गांधीजीनी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सन्दर्भ में जो कदम उठाये वे बहुत अदभुत थे। उन्होने अस्पृश्यता को नया अर्थ दिया। शुद्र और अस्पृश्य अब नहीं रहे, अब उन्हें हरिजन के नाम से संबोधित किया गया। महात्मा गांधी हरिजनों के साथ रहें। उनका यह स्पष्ट मत था कि हरिजनों के सह योग के अभाव में राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता। अंग्रेजों ने अपनी नीति के अनुसार अस्पृश्य लोगों को राष्ट्रीय प्रभाव से अछूता मानकर भारत की, शक्ती को विभाजित किया। महात्मा गांधी का यह स्पष्ट मत था कि हरिजनों को सामाजिक सन्दर्भों में संपूर्ण न्याय मिले अन्यथा भारतीय स्वतंत्रता की कल्पना का कोई अर्थ नहीं है। और इसीलिये भारतीय स्वतंत्रता के साथ अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन उनके जीवनका महत्वपुर्ण अंग बन गया था।

आज हम स्वतंत्र है। भारत को स्वतंत्रता मिले। साठ साल हो गये, भारत ने वैज्ञानिक प्रगति की है। विश्व में भारत का सिर ऊंचा है यह हमारे लिए गौरव की बात है, हम सभी भारतवासियों को इस देशपर अभिमान है फिर भी पढे, लिखे अस्पृश्य युवकों को सवणों की बस्ती में आज भी किराये से मकान नहीं मिलते। सार्वजनिक जीवन में आज भी उन्हें समानता का सम्मानजनक व्यवहार प्राप्त नहीं है। कई सालों से लेकर आज तक अछुतों के मंदिर प्रवेश की समस्या उसी रुप में हमारे समाज के सामने मुँह खोल कर खड़ी है। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे राज्यों में आज भी अछुतों को मंदिर प्रवेश नहीं है। दलितोंपर अन्याय, अत्याचार की घटनाएँ महाराष्ट्र में भी घटीत होती है। दलीतों के घरों को जलया जाता है, देहातों में ज़मींदार, सेठ, साहुकार या गाँवनेता, पंचायत के मुखिया दिनदहाडे दलित स्त्रियोंपर अत्याचार करते है। उनकी गरीबीका नाजायज़ फायदा उठाते है। दलित स्त्री को उनके बाप की जागीर समझकर अधिकार जताते हैं।

अभी-अभी महाराष्ट्र में घटित एक घटना तो ऐसी है कि एक गाँव में ग्रामपंचायत के मुखिया ने दलित स्त्री को विवस्त्र कर सिरके बाल कटवाकर मार पीटकर गली में छोड दिया। ऐसी कई अत्याचार की घटना रोज़ कहीं न कहीं घटती ही रहती है।

दलितों की कमज़ोर आर्थिक स्थिति का फायदा उठाकर गाँव का जमींदार, पंचायत का प्रमुख या कोई राजकीय नेता दलितों पर हुकूमत करता है। दलितों पर हुकूमत करना अपना अधिकार समझता है। दलितों के विकास के लिए बनायी गई योजनाएँ कागज पर ही रह जाती है, आज तक दलितों का उपयोग केवल वोटों के लिये ही किया गया जैसे आम का रस चुस कर गुठली को फेंका जाता है। आज भी प्रत्येक पार्टी के नेता ने दलितों का उपयोग चुनाव मात्र के लिये किया बाकी कुछ नहीं है।

दलितों की आर्थिक स्थिति आज भी बिगडी हुई है। उनकी परिस्थिती में विशेष कोई फर्क नहीं है। सरकारी योजनानाएँ सिर्फ बनाई जाती है, परंतु उन विकासात्मक योजनाओं का अंमल नहीं होता। आज दलित कई समस्याओं से घिरा हुआ है अशिक्षा, व्यसन, अस्वच्छता और परिवार नियोजन आदि।

दलितों ने आज तक बहुत यातनायें सहन करली।

यदि तुम पढ़ना चाहते हो, तो प्रत्येक मनुष्य अपने आप में पूर्ण एक ग्रंथ है। – **चैमिंग.**

एक समय ऐसा था कि धार्मिक अन्धविश्वासों और रुढियों ने समाज को अंधा बना दिया था। समाज में एक ऐसा वर्ग पैदा होगया जिसने देवताओं और धार्मिक विश्वासों का भय देकर साधारण जनता का शोषण किया। इस तरह पंडित, पुरोहित, साधु संतो, योगी, ब्राम्हण एक बडा वर्ग अकर्मण्यता भोगी हो गया था। समाज में जाति-पाति का घीनोना बीज बोकर स्वयं को श्रेष्ठ मानते थे। धार्मिक क्रिया-कर्म देवताओं की पुजा का अधिकार व देवता अपने बाप की जागीर समझते थे। और अछूतों याने दलित वर्गपर अत्याचार करते थे। आज पंडीत-पुरोहितों का राज चला गया। परंतु निधर्मी, कर्मठ, पैसेवालों तथा गुण्डों का राज आरंभ हो गया, जो अछूतों का जिना हराम कर दिया।

मानव में कोई भेद नहीं होता। कोई श्रेष्ठ और कनिष्ठ नहीं होता। मनुष्य श्रेष्ठ होता है, अपने कर्मो से। परंतु ब्राम्हण, भट्ट, पुरोहितों ने अपने वैयक्तिक स्वार्थ के लिएं दलित वर्ग को अछूत घोषित कर समाज में दरारें पैदा कर दी। जिसके कारण दलित समाज में सम्मान से जी न सकें। दलितों की बस्तीयाँ गाँव के बाहर, दलितों को छूना अशुभ समझा जाता था, देवता ओं का कोप, दलितों को सवर्णो के घरों मे प्रवेश नहीं, कुएँ पर प्रवेश नहीं, मन्दिरों मे प्रवेश नहीं। गाँव मे दलित केवल भट, ब्राह्मण, जमींदार के काम करने के लिए ही पैदा हुआ था, उसके बच्चों को पाठशाला मे प्रवेश नहीं था।

समय के साथ बदलाव आया। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, महत्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले जैसे महात्माओं ने जन्म लिया। जोतिबाजीने दलितों के लिए पानी भरने अपने स्वयं का कुआँ खुला कर दिया। सावित्री बाई की पहली विद्यार्थीनी एक हरिजन लड़की थी। महाराष्ट्र के पूजनीय साने गुरुजी ने भारत के इस एकात्मक, निर्माण का सपना देखा था। और उसे आन्तर भारती के नाम से एक अभियान के रुप में चलाया। मानव को मानव से मुक्ती मिलनी चाहिये यही उनका नारा था। एक गाँव-एक पनघट इन समस्या ओं को लेकर बाबा आढावजी ने काम किया। यह जागरण संपूर्ण भारत में फैल जाये तो अछूतो के प्रश्न का निश्चित रुप से समाधान होगा।

आंबेडकर जी के कारण दलितों को सम्मान मिला। दलितों को शिक्षा का महत्व समझाया, स्वच्छता का मंत्र दिया। अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध की सिख दी। उनका सपना था कि दलित आम समाज या मानव की तरह सम्मान से जीये। परंतु खेद इस बात का है कि आज भी इस स्वतंत्र भारत देशमें आधुनिक भारत में दलितों को अलग अलग मोर्चोपर लड़ाई लड़नी पड रही है। अछूतों को कब सम्मान मिलेगा ? दलितों के मन में घर कर बैठी अछूत भावना कब समाप्त होगी ? दलित स्त्रियोंपर होनेवाले अत्याचार कब थम जायेगे ? दलित के घर जन्में बच्चे पर दलित होने का धब्बा कब मिटेगा ?

यह बात सत्य है, कि कानूनी तौर पर दलितों को चुनाव में आरक्षण दिया गया परंतु वह केवल नाम के लिए है। अस्पृश्यों का शोषण और अत्याचार आज भी जारी है। कानुन में इस प्रश्न का हल खोजा नहीं जा सकता। जातिका यह संघर्ष इसलीये भी बहुत कठिन होता जा रहा है कि इसका आधार आर्थिक है। आज यह प्रश्न इतना भीषण एवं सर्वव्यापी हो गया है कि इसके संबंध में निश्चित रुप से विचार किया जाना बहुत ही आवश्यक है। अछूत आज का अत्यंत ज्वलंत उदाहरण है। भारत के करोडों लोगों का स्वास्थ्य, सुरक्षितता तथा आशा आकांक्षा इस प्रश्न में निहित है।

दलितों की बस्तियाँ अलग रखने से काम नहीं चलेगा। उन्हें अलग रखनेसे प्रश्न हल नहीं होते। दलितों को प्रमुख प्रवाह में लाना ज़रुरी है। समाज को विभक्त

मनुष्य जितना छोटा होता है, उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है। **– रोमो.**

करने की अपेक्षा अधिकाधिक एकात्मक बनाने से ही देश की ताकत बढेगी। सभी भारतवासी आशावादी बने, मानव कल्याणकारी दृष्टि रखें, सभी के कल्याण में अपना और देश का कल्याण निश्चित है । ऐसा मानों तो अछूतों का प्रश्न हल करना कोई कठिन काम नहीं है। भारत के नागरिक के रुप में हम सभी समान है, यह भावना भारतवासियों के मनमें निर्माण करना आवश्यक है । आशा है कि वह दिन बहुत जल्दी आये कि अछूत यह संज्ञा आनेवाली पीढी को अपरिचित हो !

महँगाई : एक समस्या

कु. स्वाती कोटकर,
तृतीय वर्ष कला.

महँगाई बढ़ने का प्रमुख कारण है जनसंख्या में वृध्दि। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात मे ज़रुरी वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता तब महँगाई बढ़ती है। कालाबाज़ारी, तस्करी आदि के कारण भी मूल्यों मे वृद्धि हो जाती है।

भारत को 'स्वराज' मिले आधी सदी बीत गई, पर 'सुराज' अब तक नहीं मिला। नौ पंचवार्षिक योजनाएँ अंमल में आई पर भारत की गिनती आज भी दुनिया के पिछड़े हुए देशों में होती है । इसका कारण है देश की लगातार बढती हुई जनसंख्या। जनसंख्या में हो रही भारी वृद्धि ही देश की समस्याओं की जड़ है। एक ओर बढती हुई आबादी उसके कारण बेरोज़गारी और उतनी ही भयंकर समस्या महँगाई !

हमारा जीवन समस्याओं की धर्मशाला बन गया है। आए दिन नई समस्याएँ आती रहती हैं और हमें परेशान करती रहती हैं। कुछ समस्याएँ तो हमारे जीवन में जमकर बैठ जाती है। महँगाई एक ऐसी ही समस्या है, जो लगातार बिकट रुप धारण करती जा रही है।

महँगाई का अर्थ है जीवनावश्यक वस्तुओं के मुल्य में लगातार वृध्दि । रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और मनोरंजन ये आज के मनुष्य की आवश्यकताएँ है। यदि आम आदमी की आवश्यकताओं की पूर्ति सरलता से होती है तो महँगाई का प्रश्न ही नहीं खड़ा होता। लेकिन ऐसा नहीं होता। विभिन्न कारणों से बाज़ार में चिजों के दाम बढ़ते जाते हैं। जब यह मुल्य वृध्दि आम आदमी की पहूँचसे बाहर हो जाती है, तब उस स्थिति को महँगाई का नाम दिया जाता है। दुर्भाग्य से पिछले कई दशको से महँगाई ने लोगों का जीना हराम कर दिया है।

महँगाई बढ़ने के अनेक कारण है। सुखा बाढ हिमपात आदि प्राकृतिक कारणों से फसलें नष्ट होती है, उससे खाद्य पदार्थों की कमी होती है। इस कमी के कारण बाज़ार में अनाज, सब्जियों और फलों के दाम बढ़ जाते हैं। उत्पादन में खर्च बढ़ने पर उत्पादित वस्तुओं के मुल्य में

यदि तुम अपनी आय से कम में निर्वाह कर सकते हो,
तो निश्चय जानो कि, पारस पत्थर तुम्हारे पास है। – **बेंजामिन फ्रँकलिन.**

वृद्धि हो जाती है। कोयला, पेट्रोल, केरोसीन आदि इंधनो की मुल्य वृद्धि से भी महँगाई बढ़ जाती है। युध्द, हड़ताल, दंगे आदि के कारण बाज़ार में वस्तुओं की आपूर्ति पर विपरीत असर होता है। महँगाई बढ़ने का प्रमुख कारण है जनसंख्या में वृध्दि। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में ज़रुरी वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता तब महँगाई बढ़ती है। कालाबाज़ारी, तस्करी आदि के कारण भी मुल्यों मे वृद्धि होती है।

जनसंख्या पर नियंत्रण करना आज समय की सबसे बडी माँग है। वैसे तो मालथुजियन थियरी के अनुसार प्रकृति स्वयं जनसंख्या का संतुलन करती है। युध्द, दंगे, बिमारियाँ, बाढ, भूकंप आदि बढ़ी हुई आबादी को कम कर देते हैं। फिर भी देशवासियों का कर्तव्य है कि जनसंख्या को बढने न दे। देश में सुख, शांती और प्रगति के लिए जनसंख्या का सीमित रहना जरुरी ही नहीं अत्यावश्यक भी है। पश्चिमी देशों की प्रगति का एक रहस्य कम आबादी भी है।

महँगाई हमारे यहाँ की सबसे भयंकर बला है और उसीके साथ हमारे देश की गरीबी। वैसे तो महँगाई अनेक दुष्परिणामों को जन्म देती है। ज़रुरी वस्तुओं के दाम बढ़ने से जनता को उदरनिर्वाह करना भी कठीन हो जाता है। जनता की समस्याएँ भयानक रुप ले लेती है। जी तोड मेहनत करने पर भी गरीबों को पेटभर भोजन नहीं मिलता।

वैसे तो श्रम के बिना कुछ नहीं मिलता। पर यह दुख की बात है कि हमारी वर्तमान शिक्षा नीति हमें श्रम से दूर ले जा रही है। आज यह युवा-वर्ग कम से कम श्रम करके अधिक-से- अधिक धन कमाना चाहता है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र केलिए यह प्रवृत्ती चिंताजनक कही जा सकती है।

इसमें संदेह नहीं कि परीश्रम वह पारस है, जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है। इसलिए श्रम से दूर भागना स्वस्थ मनोवृत्ती का सुचक नहीं है। हमें यह नहीं भुलना चाहिए कि जीवन में सफलता के फुल श्रम के पौधे पर खिलते हैं। पर यह बात अलग है कि सामान्य परिवारों के बच्चों को पोषक आहार न मिलने से उनका उचित विकास नहीं हो पाता। गरीब परिवार के लड़के - लड़कीयों को अपनी पढाई बिच में ही छोड देनी पड़ती है। कन्याओं के हाथ समयपर पिले नहीं हो पाते। मध्यम वर्ग के लोग कर्ज़ के बोझ से दब जाते है। चोरी रिश्वतखोरी, डकैती, तस्करी, गुंडागर्दी आदि सामाजिक बुराइयों का मुख्य कारण महँगाई ही है।

महँगाई पर नियंत्रण करने के प्रयत्न सफल नहीं हो पाते। सरकारी प्रयास भी हाथी के दँत ही साबीत होते हैं। फिर भी यदि हमारी सरकार, व्यापारी और जनता समझदारी से काम ले ले तो इस समस्यापर कुछ अंकुश लगाया जा सकता है। वस्तुओं के उत्पादन और पूर्ति पर भी सरकार को नज़र रखनी चाहिए। व्यापारी और कालाबाज़ारी से बचे और सभी लोग यह निश्चय करे कि सादगी तथा संयम का जीवन हम अपनाए तो मुल्य वृद्धि को रोका जा सकता है।

हे भगवान! महँगाई की मार से हमें बचा ले!

B 4sful

ये चार स्वतंत्रताएं प्रत्येक व्यक्ति को मिलनी चाहिए। -

१. विचारों की २. धार्मिक

३. अभावों से ४. भय से

– रुझवेल्ट

साँई इतना दीजिए जामें कुटुंब समाय। मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाए॥ **– महात्मा कबीर.**

कबीर की दार्शनिक विचार धारा

प्रा. देवीदास चौधरी,
हिंदी विभाग, कनिष्ठ महाविद्यालय.

महात्मा कबीर एक ऐसे संत कवि थे जो कागज़ की लेखी बात को अधिक महत्व न देते हुए ऑखिन की देखी बात को महत्व देते थे। उन्होने संसार को भलि भाँति परख लिया था तथा इस संसार से मुक्ति पाने का आसान मार्ग भी उन्होने बताया। अतः हम यह कह सकते है कि कबीर उच्च कोटि के दार्शनिक थे।

महात्मा कबीर अज्ञान और अंधकार से व्याप्त तत्कालीन समाज में एक प्रकाश पुंज की भाँति उदित हुए। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न था। वे एक साथ ही योगी, दार्शनिक समाज सुधारक भक्त एवं कवि सभी कुछ थे। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता तो यही थी कि वे किसी भी धर्म या विचारधारा के न होते हुए भी सभी के थे।

कबीर परंपरा प्रचलित विविध दार्शनिक मतमतांतरों के सुक्ष्म अध्येता नहीं थे। उनका दर्शनिक चिंतन कुछ तो अपने व्यावहारिक ज्ञान और बहुत कुछ उनकी अपनी बहु श्रुतता पर आधारित है। कबीर जिस युग में हुए उसके पहले भारत में अनेकों दार्शनिक चिंतन धाराओंका विकास हो चुका था। विशेषतः तीन प्रकार के दर्शनिक चिंतनों का बोलबाला था। हिंदुओं के अद्वैतवाद, ईस्लाम के एकेश्वर वाद। इन चिंतन धाराओं की अधिक गहराई में न उतरकर कबीर ने सभी की मान्यताओंका प्रमेय देते हुए अपने मत का प्रचार किया।

कबीर की ईश्वर कल्पना हिंदुओं के अद्वैतवाद इस्लाम के एकेश्वरवाद तथा बौध्दोके शुन्य निरंजन तीनों का मिला जुला रूप है। कबीर 'आँखिन की देखी' को ही प्रमाण रुप से प्रस्तुत करते है।

जीव के रहस्य को समझने के लिए संसार की उत्पत्ती और विनाश, सष्टि और उसके कर्ता का स्वरुप तथा परमतत्व के साथ जीव के विभिन्न संबंध स्वरुप की क्रमिक विचार परंपराने विविध दार्शनिक मतवादों को जन्म दिया।

कबीर दर्शनिकता के अंतर्गत - ब्रह्म, जीव, माया तथा जगत् का अंतर्भाव होता है :-

१) ब्रह्म :-

कबीर ने ब्रह्म के दो रुप माने है - व्यक्त और अव्यक्त अर्थात् सगुण और निर्गुण। लेकिन उनके काव्य में अधिकांशतः ब्रह्म के निर्माण स्वरुप की अभिव्यक्ति मिलती है। ब्रह्म निराकार निर्मातित एवं निरोगधिक माना जाता है। और व्यावहारिक सत्ता के रुप में वह भक्तों द्वारा सृष्टि का कर्ता धर्ता एवं हर्ता समझा जाता है। परंतु कबीर का मूल स्वर निर्गुण ब्रह्म की उपासना ही रहा है। कुछ स्थानों पर कबीर ने ब्रह्म के सगुण रूप का ही वर्णन किया है। जैसे ''सगुण ही निर्गुण ही नहीं कुछ भेदा''

कबीर सगुण ब्रह्म के प्रति अपनी दास्य भावना प्रकट करते हैं भगवान के अनुग्रह को पाने की अभिलाषा

कहाँ से ? किधर ? क्यों ? कैसे ? सारा दर्शनशास्त्र इन्ही प्रश्नों की व्याख्या है। **– शूबर्ट.**

व्यक्त करते है।

'कबीर कुत्ता राम का मुतिया मेरा नाऊँ,
गले राम की जेवड़ी जित खिंचे तित जाऊँ।'

कबीर के भगवान भक्त वत्सल है। अनंत करुणामय और तीनों की पीर को समझने वाले है। कबीर के काव्य में दाम्पत्य सबंध के मिलन और विरह दोनों ही प्रकारके मनोरम चित्रौं का प्रस्तुतीकरण करने में कबीरजी अत्यंत प्रवीण है।

'ये ऑखिया अलसानी हो, पिय सेज चली।'

उसी प्रकार विरह का एक उदा. देखने योग्य है -

'चकवी बिछुरी रैन की भाई मिली परभाती।
जे जन बिछुरे राम से ते दिन मिलें न राती॥'

कबीर ने अपने को दुलहिन या पत्नी के रुप में तथा भगवान को पति के रुप में मानकर दाम्पत्य सम्बन्ध का अत्यंत सरस चित्रण किया है। -

'दुलहिन गावहु मंगलाचार,
हम हरि आये हो राजाराम भरतार।
तन रत करि में मन रत करि हूँ, पंचतत बराती,
रामदेव मोरे पांहुने आये, जीवन में माती॥'

प्रतीक के रुप में भी ब्रह्म की कल्पना की है - प्रतीक दो प्रकार के होते हैं - मूर्त और अमूर्त. मूर्त प्रतीक का उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

'जल में कुम्भ कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जल ही समाना, यह तथ कथ्यो गियानी॥'

निर्गुण स्वरूप :-

संत कवियों के अनुसार परमतत्व ही पारमार्थिक तत्त्व है। वह सत् चित् आनंद स्वरुप है। वह निर्गुण निराकार, निर्विकार, शाश्वत, अपार, असीम, अजन्मा, सकर्ता, अविनाशी, ह्रदयातीत, गुणातीत, संख्यातीत एवं सकल अतीत है। वह सुक्ष्मसे सुक्ष्म और स्थुल से स्थुल है। कबीर का कथन है कि परमात्मा ने विशालकाय हाथी को बनाया है साथही छोटी-सी चिटी को भी बनाया है -

'साई के सब जीव है किरी कुंजर दोय।'

उनके संबंध में अधिक कहा भी नहीं जा सकता। असीम को असीम भाषा में बाँध सकना संभव नहीं। निर्गुणोपासक संतों ने अपने ब्रहम को विभिन्न रुपों मे चित्रित किया है। कबीर ने ब्रहम को एक कहा है -

'मुसलमान कहै एक खुदाई,
कबीर के स्वामी घटी-घटी रहयौ समाई।'

अर्थात् संसार का कर्ता एकही है और वह सर्व व्याप्त है -

'जाकै मुड़ माथा - नहीं नहिं रुप अरुप
पुहुप बास से पातरा ऐसा तत्त अनूप।'

कबीर ने निर्गुण ब्रह्म का वर्णन निर्गुणवाचक विशेषणों द्वारा भी किया है और अलख, निरंजन आदि कहा है। 'सहज' भी कहा है। उनका कथन है कि सहज-सहज पुकारते है, परन्तु वास्तविक सहज को कोई नहीं पहचान सका - जिस व्यक्ति को सहजता से प्रभु मिल जाये, वह सहज साधक है।

२) जीव :-

सामान्यतया लोग जिसे मरता-जीता देखते है उसे जीवात्मा कह देते है। वस्तुत: वह आत्मा नहीं है - जो जन्म लेता है और मरता है, वह तो पंचतत्वो से निर्मित शरीर है। जीवात्मा तो चिरन्तम सत्य है और उसमें तथा परमात्मा में कोई पारमार्थिक भेद नहीं है।

उपनिषदों में आत्मा (जीव) को ब्रह्म कहकर आत्मा और ब्रहम की इसी अभिन्नताका प्रतिपादन किया है। गीता में आत्मा को अनिश्वर मुलतत्व कहा गया है। आत्मा तथा परमात्मा के एकत्व का निरुपण तो अद्वैतवाद का तो प्राण है। जीवात्मा और परमात्मा वस्तुत: एकही है।

ज्ञानी पुरुष यह देखता है कि एक अविभक्त परमात्मा सब प्राणियों में पृथक् पृथक् रुप से विद्यमान है। – **ब्रजभूषण शर्मा**

किंतु व्यावहारिक रुप में जीवात्मा शरीरबध्द होने के कारण भिन्न प्रतीत होता है। जैसे -

'जल मे कुम्भ है, कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूट्यो कुम्भ जल-जल ही समाना यह तथ्यौ कथ्यो गियानी॥'

घडे को फोड देने से दोनो जल एकही हो जाते है। ज्ञान द्वारा माया एवं भ्रम का निर्मुलन कर देने से जीवात्मा और परमात्मा की स्थिति एक जैसी हो जाती है। कबीर ने जीवात्मा को एक माना है। उनके अनुसार आत्मा एक है तथा वह सर्वव्यापी तत्व है। कुम्हारने एक ही मिट्टी गुथकर अनेक प्रकार के रुपों को सँवारा है। परंतु सभी रुपों में एक ही ब्रह्म विद्यमान है। विभिन्न नाम रुपात्मक जगत् में एक ही जीवन तत्व व्याप्त है। कबीरने अपने राम को आत्माराम भी कहा है। बूँद में समुद्र व्याप्त है और समुद्र में बूँद। दोनों एक दूसरे से पृथक नहीं किये जा सकते।

आत्मा के पारमार्थिक एवं व्यावहारिक दो रुप है। एक सत्य नित्य और युक्त रुप में और दुसरा जीव कहलाता है जो मायोपाधिक होकर संसार में जन्म लेता है और मृत्यू को प्राप्त होता है। कबीर ने शरीरस्थ आत्मा के दो रुपों को माना है जिन्हें ज्ञाता एवं गेय की संज्ञासे अभिहित किया गया है। कबीरने माया में आबध्द जीव को अज्ञानी जीव कहा है। अज्ञानी पुरुष को मधुर माया भूला भूलाकर अपने मोह पाश में जकडती है। जिज्ञासु जीव की बुध्दी में ज्ञान का प्रकाश होता है और वह अपने स्वरुप का चिंतन करता है।

कबीर ने जीव को भी निर्गुण निराकार माना है। कहीं कहीं उसके साकार रुप की भी अवधारणा हो गई है। साकार रुप में वर्णन करते हुए वे उसे दीपक की ज्योति के समान बताते है और उसे ही व्यक्ति या जीवन कहते है। मनुष्य का शरीर तो एक मन्दिर के समान है जो आत्मारुपी ज्योति से प्रकाशमान रहता है और उसके बुझते ही मानव जीवनका अंत हो जाता है। अर्थात मनुष्य का शरीर नश्वर है।

'पानी केरा बुद बुदा अस मानस की जाति।
देखत ही छिप जाएगा जो तारा परभाती॥'

कबीर ने जीव को पवन, प्राण, आत्मा, शब्द, मन, आनंद आदि रुपों में चित्रित किया है।

३) माया :-

कबीरने माया की कटु एवं तीव्र नींदा की है। कबीर माया को त्रिगुणात्मिक मानते है और कहते है कि सत, रज तम संयोग से माया का उदय हुआ है और इसी माया के द्वारा सृष्टिका विस्तार हुआ है। कवि ने माया को महाठगिनी भी कहा है। माया से छुटकारा पाने के लिए कोई लाख कोशिश करे परंतु कोई माया से छुटकारा नहीं पा सकता। माया कभी माता-पिता, स्त्री-पुरुष, आदर-मान, जप-तप, एवं योग के रुप में बंधन डाल देती है। कबीरने माया को डायन, पापिनी, सांपिनी, पिशाचिनी, जादूगरनी, नकटी, और मोहिनी भी कहा है:-

'एक डायन मेरे मन में बसै,
नित उठ मेरे जिय को डसै।'

माया सर्वव्यापी है। इसके प्रभावसे जीव को अपना स्वरुप विस्मृत हो जाता है, और उसे चौरासी लख योनियों में भ्रमण करना पडता है। संसार में कोई भी इसके प्रभावसे बच नही सकता मात्र कबीर बच गये है -

'कबीर माया पापणी, फंद ले बैठी हाटि।
सब जगती फंधै पड्या, गया कबीर कोटि॥'

माया की परिधि इन्द्रिय-विषय ही नहीं है, अपितु मन भी है। माया के पाँच सशक्त बेटे हैं - काम, क्रोध, मोह, मद और मत्सर। मन के सभी विकार माया के साथी है। कबीर माया को मिथ्या मानते है।

'माया महाठगिनी हम जानी।

यदि गुरू से सत्य 'नाम' की प्राप्ति नहीं की तो सत्याचरण का कोई मोल नहीं है। इसलिए सत्य 'नाम' के ज्ञान के साथ ही उसमें लीन होना चाहिए। – **महात्मा कबीर.**

तिरगुण फाँसलिया कर डोले मधुरबानी ।।'

माया के बंधन अत्यंत कठोर होते है, यह इतनी स्वच्छ चरिणी एवं स्वतंत्र है कि वेश्या के समान बाज़ार में बैठकर जीवों को आकर्षित करती है। कोई प्रतिबंध नहीं मानती। इस प्रकार कबीरने माया की कटू निंदा की है।

४) जगत् (संसार/दुनिया) :-

कबीर ने जगत को मिथ्या और उसके मूल में निहित अत्मा तत्व को चिरंतन सत्य कहा है। कबीर ने भी जगत् की पारमार्थिक सत्ता स्वीकार की है ब्रह्म संपूर्ण जगत में व्याप्त है। परंतु लोग जगत् को सत्य मान बैठते है और परमतत्व को भूल जाते है। कबीर का कथन है कि सत्य वही है जो स्थिर रहनेवाला है और जो उत्पन्न होकर विनष्ट हो जाता है मिथ्या है। जगत् जल और बूँद के समान क्षणभंगूर है। कबीर परमात्मा को जगत् का कर्ता बताते हुए कहते है कि जिस प्रकार वणिक (वाणी) हाट का प्रसार कर देता है, उसी प्रकार स्रष्टा ने इस निखिल विश्व का प्रसार कर रखा है।

सृष्टि कर्ता में ही सृष्टि है और सृष्टि में ही सृष्टि कर्ता है

'खालिक में खलक, खलक में खालिक,
सब घट रहयो समाई।'

कबीरने संसार को अनेक विषय वासनाओं का केंद्र कहा है। ये वासनाएँ व्यक्ति के मत को बलात अपनी ओर आकृष्ट करती है। इनके आकर्षण में फँसा हुआ मन भाँति-भाँति के कष्ट उठाता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर कबीरने एक स्थानपर संसार को-विषधरनाग के समान बाताया है।

एक रहस्यवाद के रुप में कबीरे संसार को जीवात्मा रुपी स्त्री का "नैहर" कहते है। जैसे स्त्री नैहर में थोड़े दिन रहकर अन्ततः पीव के घर जाती है, उसी प्रकार जीवात्मा भी संसार में बहुत अल्प समयतक निवास कर अन्ततः ब्रह्मपद में स्थायी निवास प्राप्त करता है। इस संसार में आत्मा चार दिन के पाहुने के रुप में आती है।

कबीर ने संसार के प्रति अपने विस्तृत दृष्टिकोण को स्पष्ट कर दिया है। उनकी दृष्टि से संसार माया का प्रपंच मात्र है, अतः वे इसकी आसक्ति यों से दूर ही रहने की सलाह देते है।

संक्षेप में हम यह कह सकते है कि महात्मा कबीर एक ऐसे संत कवि थे जो कागज़ की लेखी बात को अधिक महत्व न देते हुए आँखिन की देखी बात को महत्व देते थे। उन्हों ने संसार को भलि भाँति परख लिया था तथा इस संसार से मुक्ति पाने का आसान मार्ग भी उन्होने बताया। कबीर उच्च कोटि के निःसंदेह दार्शनिक थे।

- - -

संदर्भ -

१. कबीर और रैदास - एक तुलनात्मक अध्ययन,
डॉ. चन्द्रदेव राम, पृष्ठ १७, १५७ .

२. कबीर - आलोचनात्मक अध्ययन,
डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, पृष्ठ ४२, ४५.

B 4sful

इन चारों की परीक्षा विपत्ती काल में होती है। -

१. धैर्य, २. धर्म,
३. मित्र, ४. पत्नी.

– गोस्वामी तुलसीदास

क्या आप जानते है ?

कु. कल्पना भोसले,
तृतीय वर्ष कला.

१) रासो काव्य में वीर रस की प्रधानता है।
२) 'पृथ्वीराज रासो' चंदबरदाई की रचना है।
३) गोरखनाथ को नाथपंथ के प्रवर्तन का श्रेय दिया जाता है।
४) कबीर के गुरु का नाम रामानंद था।
५) मलिक मुहम्मद जायसी का प्रसिध्द महाकाव्य 'पद्मावत' है।
६) तुलसीदास रामभक्ति काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि है।
७) तुलसीदास का प्रसिध्द महाकव्य 'रामचरितमानस' है।
८) 'सूरसागर' सूरदास की प्रसिध्द रचना है।
९) नीतिकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि रहीम है।
१०) बिहारी ने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सुंदर वर्णन किया है।
११) चंद्रकांता देवकीनंदन खत्री का प्रसिध्द उपन्यास है।
१२) प्रेमचंद के गोदान उपन्यास को 'भारतीय कृषक जीवन का महाकाव्य' कहा जाता है।
१३) 'माटी की मूरतें' रामवृक्ष बेनीपुरी का प्रसिध्द रेखाचित्र संग्रह है।
१४) पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी केवल तीन कहानियाँ - १) उने कहा था, २) सुखमय जीवन, ३) बुध्दु का काँटा - लिखकर अमर हो गए।
१५) भारत की राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिंदी है।
१६) १४ सितंबर को हिंदी-दिवस मनाया जाता है।
१७) भाषा हमारे मन और मास्तिष्क का दर्पण है।
१८) भाषा पूर्ण रुप से सामाजिक वस्तु है।
१९) हिंदी में 'कैंची' शब्द तुर्की भाषा से आया है।
२०) हिंदी में 'बिस्कुट' शब्द पुर्तगाली भाषा से आया है।

साहित्यिक प्रश्नावली

कु. शिल्पा कोकणे,
तृतीय वर्ष कला.

१) बाबू हरिश्चंद्र को किस उपाधि से विभूषित किया गया था ?
२) खड़ी बोली का पहला महाकाव्य कौन-सा है ?
३) कामायनी के रचयिता कौन है ?
४) पंत को चिंदबरा पर कौन सा पुरस्कार मिला ?
५) हिंदी की किस कवयित्री को आधुनिक मीराँ कहा जाता है ?
६) किस कवि को हिंदी का वर्डस्वर्थ कहा जाता है ?
७) दिनकर को किस काव्यकृति पर ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया ?
८) प्रयोगवाद का प्रवर्तक किसे माना जाता है ?
९) हिंदी पत्रकारिता का आदि प्रवर्तक किसे माना जाता है ?
१०) 'हंस' पत्रिका के संपादक कौन थे ?
११) अतीत के चलचित्र किस की रचना है ?
१२) निराला किस कवि का उपनाम है ?
१३) 'मेरी इक्यावन कविताएँ' किसकी रचना है ?
१४) हिंदी साहित्य में कलम का सिपाही किसे कहा गया है ?
१५) महावीर प्रसाद द्विवेदी किस पत्रिका के संपादक थे ?

- उत्तर -

१) भारतें दु,
२) प्रिय प्रवास,
३) महाकवि जयशंकर प्रसाद,
४) भारतीय ज्ञानपीठ,
५) महादेवी वर्मा,
६) सुमित्रानंदन पंत,
७) उर्वशी,
८) अज्ञेय,
९) किशोरीलाल गोस्वामी,
१०) प्रेमचंद,
११) महादेवी वर्मा,
१२) सुर्यकांत त्रिपाठी,
१३) अटल बिहारी वाजपेयी,
१४) प्रेमचंद,
१५) सरस्वती।

जिस मनुष्य की जितनी कम आवश्यकता होती है, वह ईश्वर के उतना ही समीप होता है। – **सुकरात.**

हिंदी सुविचार

द्वितीय वर्ष कला, हिंदी विभाग.

१. ज्ञान सूरज है, अज्ञानता अंधकार है।
२. आलस्य दरिद्रता का दूसरा नाम है।
३. क्षमा करने से मानव क्षमा का पात्र बनता है।
४. समय मिलता नहीं, निकालना पड़ता है।
५. वही हाथ श्रेष्ठ और उत्तम है, जिन हाथों से सेवा, सत्कर्म और दान किया जा सके।
६. कम बोलो, काम का बोलो।
७. ग्रंथ ही सबसे बड़ा गुरु है।
८. जीवन तुच्छ बातों में समय गँवाने के लिए नहीं है।
९. अपनी गलती स्वीकार करने में लज्जा की कोई बात नहीं है।
१०. जो आत्म-संयमी है, वही सर्व शक्तिमान है।
११. सच की विजय देर से होती है।
१२. ईंट-पत्थर के सब मंदिरों के उपर हृदय का मंदिर है।
१३. असंतोष पराजय का दूसरा नाम है।
१४. मनुष्य की परख उसके कुल से नहीं कर्म से होती है।
१५. जहाँ प्रेम है, वहाँ जीवन है। जहाँ घृणा है, वहाँ विनाश है।
१६. दूसरों की निंदा करने से पहले हमें आत्मपरीक्षण करना चाहिए।
१७. ईश्वर के करीब पहुँचने के लिए मनुष्य के करीब पहुँचिए।
१८. विद्या अनंत है और समय उड़ रहा है।
१९. नरमी दूसरों को मारती है और गरमी अपने आप को।
२०. जहाँ धर्म है, वही संपन्नता, शांति और प्रसन्नता है।
२१. सम्पत्ति का उपभोग नहीं, सदुपयोग करना चाहिए।
२२. यश त्याग से मिलता है, धोखाधडी से नहीं।
२३. कर्म ही मनुष्य जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाता है।
२४. शांत और द्वेषरहित मन एक भव्य महल है।

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम – ये छः गुण जिसमें होते हैं, दैव उसी की सहाय्यता करता है। – अज्ञात.

रुबाई और हरिवंशराय बच्चन

प्रा.डॉ. अकीला शेख,
अध्यक्षा, हिंदी विभाग

उमर ख़ैयाम जैसे महाकवियों की कलम का पारस स्पर्श पाकर रुबाई का रूप इतना चमका कि ... उनकी रुबाईयों का अँग्रेजी में अनुवाद करने वाले फिट्ज़्ज़ेराल्ड (भी)विश्व में अमर हो गए है।...हिंदी के अनेक ... कवियों ने सफल रुबाइयाँ भी लिखी इन कवियो मे हरिवंशराय बच्चन का स्थान महत्वपूर्ण है।

काव्य और जीवन का परस्पर संबंध अति सूक्ष्म एवं अति व्यापक है। संसार के सभी देशों और जातियों में आरंभ से ही काव्य किसी न किसी रुप में पाया जाता है। फारसी काव्य की भी एक सुदीर्घ और सुसम्पन्न परम्परा है। फारसी के मुख्य ग्यारह काव्य रुप है जिनमें गज़ल और रुबाई प्रमुख एवं प्रसिध्द है। आज गज़ल और रुबाई फारस की ही नहीं संसार की लोकप्रिय विधाएँ बन गयी है। फिर हिंदी का कवि इन काव्यरुपों से अलग कैसे रह सकता था ? उमर ख़ैयाम जैसे महाकवियों की कलम का पारस स्पर्श पाकर रुबाई का रुप इतना चमका कि आज सदियों के बाद भी उसकी दीप्ति और गौरव अक्षुण्ण बना हुआ है। ख़ैयाम की रुबाइयाँ आज भी उनके सिर पर अमरत्व का सेहरा पहना रही है और उनकी रुबाईयों का अँग्रेजी में अनुवाद करने वाले फिट्ज़्ज़ेराल्ड विश्व में अमर हो गए है। फिट्ज़्ज़ेराल्ड के अनुवाद से प्रभावित होकर आरंभ में हिंदी के अनेक कवियों ने उमर खैयाम की रुबाइयों का अनुवाद किया और बाद में अनेक कवियों ने सफल रुबाइयाँ भी लिखी इन कवियों मे हरिवंशराय बच्चन का स्थान महत्वपूर्ण है।

हरिवंशराय बच्चन उमर 'खैयाम से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने ख़ैंयाम की मधुशाला' (सन १९३५) तथा 'उमर ख़ैंयाम की रुबाइयाँ' (सन १९५९) ये दो अनुवाद लिख डाले। 'ख़ैयाम की मधुशाला' में फिट्ज्जेराल्ड के अँग्रेजी अनुवाद के अनुसार ख़ैयाम की ७५ रुबाइयों को भावानुवाद पध्दति से सरस अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। इसमें प्रत्येक रुबाई के साथ अँग्रेजी रुपांतर को भी उद्धृत किया गया है। यह अनुवाद अधिक लोकप्रिय हुआ उसमें रसात्मकता, प्रवाह, गेयता और सौंदर्य है। जैसे -

हरी सिर पर तरुवर की डाल
हरी पावों के नीचे घास
बगल में मधु मदिरा का पात्र
सामने रोटी के दो ग्रास
सरस कविता की पुस्तक हाथ
और सबके उपर तुम प्राण
गा रही छेड़ सुरीली तान
मुझे अब मरु, नन्दन उधान॥

इसमें कवि रुबाई-की तुक-योजना नहीं निभा सका। फिर भी उसमें सौंदर्य और माधुर्य है। स्वयं बच्चन के शब्दों में '' 'रुबाईयात' के अनुवाद ने मेरे ह्रदय की बंद सुराही के मुँह से ढक्कन खींच लिया था और मदिरा की धार बह

विविध भाषांतही काही अनन्य व स्वतंत्र असे सृजनशील ग्रंथ आहेत. उदा. संत ज्ञानेश्वरांचा 'अमृतानुभव', उमरखय्यामच्या 'रूबाया', इलियटची 'द वे ऽ स्ट लँड', वगैरे. – **विंदा करंदीकर,**

चली थी-'मधुशाला' के रुप में। 'ख़ैंयाम की मधुशाला' मे केवल ख़ैंयाम और उसकी प्रेयसी का वार्तालाप नहीं है। वह तो मानव जीवन की जन्म से लेकर मृत्यु तक की चर्चा है। वह मनुष्य के सचेत होने से लेकर उसके संसार से विदा होने तक की विचारधारा है। वह मानव जीवन के कटु-कठोर जीवन सत्यों का दर्शन और उसकी प्रतिक्रिया है।''

'उमर ख़ैंयाम की रुबाइयाँ' (सन १९५९) में ख़ैंयाम की ७५ रुबाइयों का अनुवाद किया गया है। बच्चन जी के विचार में इन रुबाइयों में केवल मद्य की मादकता और नारी की कोमलता का ही वर्णन नहीं है बल्कि इसमें एक दर्शनिक विचार भी है। इसमें जीवन की गहन समस्याओं के लिए एक नया दृष्टिकोण भी है। वह सुखवादियों की फिलासफी न होकर दु:खवादियों की फिलासफी है। इस बात को बच्चनजी ने बहुत ही सुंदर शब्दों में व्यक्त किया है। वे लिखते हैं - ''मनुष्य जीवन के प्रभात में आँखे खोलकर इसी संसार को देखता है, इसी संसार को सब कुछ समझता है, न जन्म के पूर्व कुछ है, न मरण के बाद। तब इसी संसार को पाने इसीको भोगने इसीका रस लेने के लिए उसकी तृष्णा उददाम हो उठती है। पर इसे पाना सहज तो नहीं, इसके लिए बडा संघर्ष करना पडता है और पाने पर भी मनुष्य संतुष्ट नहीं होता। यह संसार पल पल परिवर्तनशील है, न सुंदरता स्थायी है, न प्रेम मरण सबकी प्रतीक्षा में रहता है। ऐसे ऐसे प्रश्न मन में उठते हैं -यह जीवन क्यों है, जब तृप्ति कहीं नहीं तब तृष्णा क्यों है, इस जग-जीवन के खेल और मनुष्य के श्रम, संघर्षण, वासना, चिंता का अर्थ क्या है। इनका उत्तर न पाकर जगत् से पलयान जीवन से उदासीनता और चेतना को विस्मृति में डुबाने की प्रवृत्ति मनुष्य को घेरती है।''

रुबाइयात बच्चनजी के गले का हार बन गयी। इसीलिए बच्चनजी का यह अनुवाद भी सरस, मधुर, मर्म स्पर्शी और सुंदर बना है।

कुछ उदाहरण :-

१.

अरे ! वे सुंदरतम वे श्रेष्ठ, जिन्हें हम करते इतना प्यार,
क्रुर-कटु कालकर्म के हाथ हो गए कितने शीघ्र शिकार,
न पी पाए थे प्याले चार, गया उनका जीवन मधु सूख,
चले करने विश्राम अनंत, लिए निज अरमानों की भूख॥

२.

प्रिये, मदिरा से देना सींच अधर मेरे होते मृत म्लान,
मरुँ तब मदिरा से ही प्राण, कराना मेरे शव को स्नान।
अँगूरी पत्तों से मृत देह मूँद, उनकी ही शय्या डाल
सुला देना मुझको चुपचाप किसी मधुमय उपवन के पास॥

३.

छिटकती नित जो एक समान, कुमुद जीवन की ज्योत्सने प्राण
देख फिर आज उदित हो चंद्र बनता नभ-मंडल छवि मान।
हाय ! इस उपवन में यह चाँद, न जाने अब से कितनी बार
करेगा आकर मेरी खोज, रहूँगा मैं जीवन के पार॥

यह अनुवाद शाब्दिक न होकर हृदय रस से ओतप्रोत है। रुबाई का प्रभाव, सौंदर्य, संक्षिप्तता आदि सब कुछ उसमें विद्यमान है। निश्चय ही उमर खैयाम की रुबाइयों के अनुवादों मे बच्चनजी का अनुवाद सर्वाधिक मधुर है। उसमें सजीवता का उपार्जन है।

बच्चनजी केवल सफल अनुवादक कवि ही नहीं है बल्कि मौलिक रुबाइयाँ लिखनेवाले कवियों में भी उनका स्थान सर्वप्रथम है। कवि के जीवन संघर्ष की प्रथम अभिव्यक्ति हमें मधुशाला, मधुबाला (स.१९३६) और मधुकलश (स. १९३७) में मिलती है। उनकी इस काव्य प्रवृत्ती को हिंदी में हालावाद नाम से अभिहित किया गया। हालावाद के प्रवर्तन द्वारा उन्हें अपरिमित ख्याति और यश

मिला। वे हाला के प्यालों की सी मयमस्त रुबइयाँ छलकाते रहें और श्रोता तथा पाठक इस मधु उत्सव में झूमने लगे, गाने लगे। उनकी रुबाइयों में मस्ती और अल्हड़ता है। उनमें शराब की कविता नहीं कविता की शराब है। उसका नशा सहृदय के दिल और दिमाग पर छा गया। बच्चन लोकप्रिय हुए, रुबाई लोकप्रिय हुई और हिंदी साहित्य में रुबाई को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ।

बच्चन जी की 'मधुशाला' सर्वाधिक लोकप्रिय रचना है। इसमें कवि की १३५ रुबाइयाँ हैं। जिन्हें सुनाते समय कवि एक अजीब मस्ती में डुब जाता था और सुनने वालों को भी डुबा देता था। 'मधुशाला' में परिशिष्ट के अंतर्गत कवि ने चार रुबाइयाँ प्रस्तुत की, जो कवि के जीवन का परिचय देती है। इसमें कवि ने लिखा है - ''मधुशाला के बहुत से पाठक और श्रोता एक समय समझा करते थे, कुछ शायद अब भी समझते हों कि इसका लेखक दिन-रात मदिरा के नशे में चूर रहता है। वास्तविकता यह है कि 'मदिरा नामधारी द्रव' से मेरा परिचय अक्षरशः बरायनाम है। नशे से इन्कार नहीं करुँगा। जिंदगी ही एक नशा है। कविता भी एक नशा है। और भी बहुत से नशे हैं। अपने प्रेमियों का भ्रम दूर करने के लिए मैने एक समय में एक रुबाई लिखी थी। -

स्वयं नहीं पीता, औरों को, किंतु पिला देता हाला,
स्वयं नहीं छूता, औरों को, पर पकडा देता प्याला.
पर उपदेश कुशल बहुतेरों से मैंने यह सीखा है
स्वयं नहीं जाता औरों को पहुँचा देता मधुशाला। ''

'मधुशाला' की प्रथम रुबाई मधुशाला में प्रियतम का स्वागत करती है। कवि अपने भावों की अनूठी मादकमयी हाला का भोग अपने प्रियतम को लगा कर फिर उसका प्रसाद विश्व को प्रदान करते हुए कहता है -

मृदु भावों के अंगूरों की आज बना लाया हाला
प्रियतम अपने ही हाथों से आज पिलाऊँगा प्याला,
पहले भोग लगा लूँ तेरा, फिर प्रसाद जग पाएगा,
सबसे पहले तेरा स्वागत करती मेरी मधुशाला॥

इसमें कवि की दर्शनिक प्रवृत्ती अभिव्यक्त हुई है। सुराही, प्याला, हाला मधुशाला इत्यादि के द्वारा जीवन की उमंग में प्रकृति के अद्वितीय एवं दिव्य स्वरुप के साथ कवि जीवन के पक्ष को ग्रहण करता प्रतीत होता है। मधुशाला कवि के जीवन-प्रेम-रस से लबालब भरा मादक प्याला ही है। इसमें अल्हाद नहीं विषाद है, आशा नहीं निराशा है -

कुचल हसरतें कितनी अपनी हाय बना पाया हाला
कितने अरमानों को करके खाक बना पाया प्याला,
पी पीने वाले चल देगें हाय न कोई जानेगा,
कितने मन के महल ढहे, तब खडी हुई यह मधुशाला।

बच्चनजी की रुबाइयों में अनुभूति की मार्मिक अभिव्यक्ति, प्रतीकात्मकता, बिंबात्मकता, रहस्यात्मकता, स्वाभाविकता, सौंदर्य, आकर्षण प्रवाह और प्रभाव है।

धर्म ग्रंथ सब जला चुकी है, जिसके अंतर की ज्वाला,
मंदिर मस्जिद गिरजे सबको तोड चुका जो मतवाला
पंडित, मोमिन पादरियों के फंदों को जो काट चुका,
कर सकती आज उसीका स्वागत मेरी मधुशाला।

प्रत्यक्ष व्यक्तिगत जीवन की कविता होने के कारण इसमें अनुभूति की सच्चाई और सामर्थ्य विद्यमान है। हाला, प्याला, मधुबाला और मधुशाला आदि प्रतिकों के माध्यम से कविने अनेक क्रांतिकारी, मर्मस्पर्शी, रागात्मक एवं रहस्यपूर्ण भावों को व्यक्त किया है।

निश्चय ही बच्चन जी ने मौलिक रुबाइयों का सृजन कर परवर्ती कवियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। उनके मधुकाव्य ने हिंदी काव्य की श्रीवृध्दि ही की है।

कला की सीमा काव्य है, अर्थात काव्य सब कलाओं में श्रेष्ठ है। **– अज्ञात.**

❖ काव्य सुरभि ❖

❖ घायल सिपाही का संदेश ❖

ओ साथी मेरे !
घर में तुम संदेश पहुँचा देना !
मुँह से किसी से कुछ न कहना
इशारों में समझा देना।
हाल जो मेरे पिताजी पूछे,
घर का जलता दीपक बुझा देना।
हाल जो मेरी बहना पूछे
राखी वापस लौटा देना।
जो हाल मेरी बीबी पूछे
तो मांग का सिन्दुर मिटा देना।
हाल जो मेरी बेटी पूछे
घर के चुल्हे की आग बुझा देना।
हाल जो मेरा बेटा पूछे
खून से रंगी ये वर्दी दिखा देना।
हाल जो मेरे गाँववाले पूछे
तो भारत माता की आन और
तिरंगे की शान दिखा देना।
हाल जो मेरे गुरुजन पूछे
तो २६ जनवरी को मिलता
वह सम्मान दिखा देना
ओ साथी मेरे !
घर में तुम संदेश पहुँचा देना !!

– कु. शकुंतला पारधी,
तृतीय वर्ष कला.

B 4sful

इनकी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। -
१. रोग
२. साँप
३. आग
४. शत्रु .

❖ मैने सोचा ❖

एक दिन सोचा तुम्हें १०० रुपयोंका
टीकट खरिद कर फिल्म दिखा दूँ।
फिर लगा ५०० रुपये लुटाकर तुम्हें
नयी लाल साडी पहना दूँ।
फिर सोचा ५००० रुपये खर्च करके
तुम्हारे गले में अच्छासा नेकलेस डाल दूँ।
मगर क्या करुँ ? ये तय ना कर पाने पर
मैने सोचा झटसे तुम्हें २ रुपये की चाय पिला दूँ।
एक दिन सोचा तुम्हें लक्झरी में बिठाकर
खंडाला की सैर कराऊँ।
फिर लगा तुम्हें रेलगाडी में बिठाकर
ताजमहल दिखा लाऊँ।
फिर सोचा तुम्हें प्लेन में बिठाकर
स्वित्झर्लंड की सैर करा दूँ।
मगर क्या करुँ ? ये तय ना कर पाने पर
मैने सोचा झट से तुम्हें
अपना कॉलेज कॅम्पस ही दिखा दूँ।
एक दिन सोचा अच्छासा ग्रीटिंग देकर
तुमसे पहचान बढ़ा लूँ।
फिर लगा पिला फूल देकर अपनी पहचान को
दोस्ती में बदल दूँ।
फिर सोचा दोस्ती तो प्यार की शुरुवात है
क्यूँ ना तुमसे मैं शादी ही कर लूँ
मगर क्या करुँ ? ये तय ना कर पाने पर
मैने सोचा रक्षाबंधन के दिन
तुमसे राखी ही बंधवा लूँ।

– श्री. ज्ञानेश्वर उगले,
द्वितीय वर्ष विज्ञान

देश का उद्धार विलासियों के हाथ से नहीं हो सकता; उसके लिए सच्चा त्याग होना चाहिए। – प्रेमचन्द.

❖ बापू मेरे ❖

पूज्य बापू !
कीजिए स्वीकार प्रणाम मेरा,
और बतलाइए, आज रह गया
क्या महत्व आपके तत्वों एवं मूल्यों का ?
सच तो यह है -
शब्द वही रहें, अर्थ बदल गए।
कैसे ?
मैंने बनना चाहा स्वावलंबी
निकाल दिए घर से नौकर चाकर
पास-पडोस के लोग हँसी उडाने लगे !
महा कंजूस मुझको समझने लगे !
मैंने अपनाना चाहा सीधा-साधा जीवन
छोड़ दिए सब फैशन-वैशन
लोग समझने लगे मुझे अनाडी-गँवार !
मैने जीवन में -
सत्य, अहिंसा और शांति को अपनाया
कभी किसी को कष्ट न पहुँचाया
हाय ! लोग समझने लगे मुझे कमज़ोर !
देख मुझे गांधीवादी
एक देवीजी बताने लगी अपने को स्वावलंबी
कहने लगी
वॉशिंग मशीन में कपडे धो लेती हूँ !
घर के सब काम-काज मशीनों से स्वयं करती हूँ !
रामभक्त हूँ
रामायण धारावाहिक देखने के लिए
हफ्तों की सहुलियत से टी.व्ही. लायी हूँ !
यह सून पूज्य बापू
कर लिए बंद मैनेआँखें, मुँह और कान अपने !!

– प्रा.डॉ.अकीला शेख,
अध्यक्षा, हिंदी विभाग.

❖ कहो ना प्यार है ! ❖

क्यूँ चलती है पवन ...
Because of evaporation !
क्यूँ झूमे है गगन ....
Because of earthm revolution !
क्यूँ मचलता है मन ....
Because of excessive respira-
tion !
ना तूम जानो ना हम ....
at above , there all the
reasons !
क्यूँ आती है बहार ....
Becuase of change in season !
क्यूँ लुटता है करार ....
Because of mental tension !
क्यूँ होता है प्यार ....
Because of attraction !
ना तूम जानो ना हम ....
Like I said, these are all
science phenomenon !
क्यूँ गुम है हर दिशा ....
Because of your
poor sense of direction !
क्यूँ होता है नशा ....
Because of drug addiction !
ना तुम जानो ना हम ....
.... Oh ! No!!

– श्री मुकेश पवार,
द्वितीय वर्ष कला.

❖ मुक्तक ❖

जीवन एक संग्राम
यहाँ लड़ना अपना काम
हार करती है बदनाम
तो जीत बढाती है नाम।

१

आर्ट में जादू होता है, दिल मिलाने का
आर्ट में जादू होता है, अपनों को पहचान ने का
आर्ट तो जीवन का एक हिस्सा है
दिलों को जोड़ने का एक किस्सा है।

२

कुछ लो कुछ छोड़ दो
तकदीर को दोष मत दो
उसमें जो लिखा है, होता रहेगा
सुख-दुख का खेल युँही चलता रहेगा।

३

विदा होते मन के भाव
वेदना से भरे रहते हैं,
अपने साथी से हाथ छुड़ाते समय
बड़े मासूम होते हैं।

४

भूलावा कैसे दूँ इस मन को
जो तेरी याद में अपने को भूल बैठा,
तुझे भूल जाने को कहता हूँ मन को
तो मन मुझ से रुठ बैठा।

५

तु नहीं सही
तेरे नाम के साथ जीना सिख लिया,
आँखे बंद कर के
सपनो में जीना सिख लिया

६

शब्द भेदी बाणों से
आज तुम ने मुझे घायल कर दिया,
प्रेम पथिक की राहों को
आज तुम ने रोक लिया।

७

काव्य भगवान की देन है,
भाव उस में मेन है,
काव्य कवि को वरदान है
इसीलिए तो कवि जगत में महान है।

८

मन के भावों की
गति को मैं समझ न पाया,
तेरे प्यार के आगे
उसे मैं रोक न पाया।

९

– श्री. अमित घोडके,
तृतीय वर्ष, कला

कविता वह मनीषा है जो हृदय को आल्हादित कर देती है। – **खलिल जिब्रान.**

❖ कुछ रुबाइयाँ ❖

(तुम बड़े हो तो बड़ी बात भी करना सीखो ॥)

रात आती है, तेरी याद में कट जाती है,
आँख रह-रह के सितारों सी डबडबाती है,
इतना बदनाम हो गया हूँ कि मेरे घर में
आजकल नींद भी आते हुए शरमाती है।

– बाल स्वरुप राही

प्यार परिचय को पहचान बना देता है,
गीत वीराँ को गुलिस्तान बना देता है,
ये आपबीती कहता हूँ मैं परायी नहीं
दर्द आदमी को इन्सान बना देता है।

– देवव्रत 'देव'

जो हरा घाव है उस घाव को भरना सीखो
जो भरी आँख है तुम उसमें उतरना सीखो
यह पराया है यह अपना, यह बात छोटी है
तुम बड़े हो तो बड़ी बात भी करना सीखो ॥

– 'नीरव'

कहाँ अब प्रेयसी का सौम्य मुखड़ा याद आता है,
न सुख ही याद आते हैं न दुखडा याद आता है
उठी भी पेट का प्रश्न लेकर जब नज़रें
कहीं पथ पर पड़ा रोटी का टुकड़ा याद आता है।

– वीर कुमार अधीर

माँ है वह सख्त भी होकर न क्रूर होती है
मैली है फिर भी यह धरती न धूर होती है
पाँव से रौंदो नहीं शीश पै धारो उसको
दोस्तों ! देश की मिट्टी सिंदूर होती है।

–भगवतशरण चतुर्वेदी

हर थकी राह को मंजिल से मिलाना होगा,
हर दुखी साँस को फुलों से खिलाना होगा
परदें नफरत ने लगाए हैं जो इस दुनिया में
प्यार के हाथ से उन सब को हटाना होगा।

– सुदर्शन पुरी

इंसान की कीमत को गुनो तो जाने
हर दर्द और पीड़ा को सुनो तो जाने
फूल रुपहला है सभी चुनते हैं
तुम अगर काँटों को चुनो तो जाने।

– गिरिराजशरण अग्रवाल

संकलन – तृतीय वर्ष कला, हिंदी विभाग.

कविता केवल वस्तुओं के रंग–रुप में सौंदर्य की छटा नही दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के सौंदर्य के भी अत्यन्त मार्मिक दृश्य सामने रखती है। **– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल.**